RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | JAN 2015 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

मैं राम कैलाश गुप्ता अपने सभी संस्थानों के सभी विद्यार्थियों तथा कार्यरत अधिकारियों, प्राध्यापकों, सहायकों व अन्य कर्मियों को 66 वें गणतंत्र दिवस की पावन बेला पर बधाई देता हूं। आशा करता हूं कि इस नए गणतंत्र वर्श में हम सभी मिलजुल कर कार्य करेंगे और अपने संस्थानों को बुलंदियों तक पहुंचाएंगे। आइये इस वर्ष हम प्रण लें कि हम सभी कार्य स्वच्छ तन और मन से करेंगे ताकि गांधी जी 150वी जयंती तक अपने घर, मौहल्ले, शहर और देश को स्वच्छ बनाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सपनों को साकार कर सकें।

राम कैलाश गुप्ता, चेयरमैन, टैक्निया ग्रुप

टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज का पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग अपने विद्यार्थियों को व्यावहारिक एवं तकनीकी ज्ञान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। अपने विद्यार्थियों को रोज़गार दिलाने हेतु अपनी हर संभव कोशिश करेंगे।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज

66वें गणतंत्र के अवसर पर मैं अजय कुमार राठौड़ टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ के सभी विद्यार्थियों तथा कार्यरत अधिकारियों, प्राध्यापकों, सहायकों व अन्य कर्मियों को बधाई देता हूं। हम प्रण लें कि हम इस नए गणतंत्र वर्श में मिलजुल कर स्वच्छ तन और मन से कार्य करेंगे और अपने संस्थान एव देश को नयी बुलंदियों तक पहुंचाएंगे।

अजय कुमार राठौड़, निदेशक, टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज

66 वें गणतंत्र के अवसर पर हम विद्यार्थी प्रण लेते हैं कि हम अपनी ओर से टैक्निया को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे। कमियां सभी में होती हैं लेकिन हम जो भी यहां से अर्जित कर सकते हैं उसका अर्जन कर ऐसा कार्य करेंगे कि टैक्निया व देश का नाम रोशन हो।

विद्यार्थी समूह, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग टैक्निया

सम्पादक की कलम से

Significance of the Obama second visit to India

President Obama and his Indian counterpart broke through a five-year impasse to pave the way for American companies to build nuclear power plants here as the two countries sought to transform a fraught geopolitical relationship into a fresh partnership for a new era of cooperation.

Opening a three-day visit amid pomp and pageantry, Mr. Obama moved to clear away old disputes that have stalled progress toward an alignment between the world's largest and most powerful democracies, a goal that has eluded the last three American presidents. Few obstacles to that have been more nettlesome in recent years than the deadlock over nuclear power.

During the first Modi-Obama Summit turned out to be highly successful step in renewing the cordial ties between New Delhi and Washington. Firstly, Very rarely countries issue joint vision statements before the summit and in this case the issuance of a joint Indo-US vision statement raised expectations that the final outcome of the summit would be a positive one. Secondly, President Obama and Prime Minister Modi co-authored an article that was published in the influential Washington Post that hinted at better days to come in the diplomatic ties between the two countries. After the summit, a joint statement issued by the two leaders, moreover, contained language that indicated India's boldness in taking clear positions and the determination of the two leaders to address certain crucial issues in the current global scenario. The first one was related to the need to tackle the menace created by the ISIS the West Asian region and the second one was about political turbulence in the South China Sea raising uncertainties over freedom of navigation.

The amity between the two leaders was palpable from the start as Mr. Modi broke with protocol to greet Mr. Obama at the airport with a warm handshake and hug. During their later public appearance, Mr. Modi referred to the president as "Barack" and thanked him for his "deep personal commitment" to their friendship.During his visit to India, Obama also became the first US president to attend the spectacular military and cultural display in a sign of the nations' growing closeness.

Obama's trip didn't go unnoticed in China, where foreign ministry spokeswoman Hua Chunying said U.S.-India relations "could promote mutual trust and cooperation in the region." But the state-run news agency Xinhua dismissed Obama's visit as "more symbolic than pragmatic, given the long-standing division between the two giants, which may be as huge as the distance between them."

Modi's economic vision for India, his robust economic diplomacy and the value of the Indian market for US companies provide the required pull-factor for President Obama's visit to India in January 2015. It is only appropriate to say that an American President's presence in the Republic Day celebration in India was long-awaited necessity. It will be an inspiration for other democracies and add value to role of democracy in world affairs. In the world of diplomacy, symbols are as important as substance.

CRE Programme - 2015

Photos: Lalit Mohan

सिर्फ डिग्री काफी नहीं, हुनर भी है जरूरी

देश में तकनीकी शिक्षा के वर्तमान स्वरूप को देखकर यह प्रतीत होता है कि हम अभी तक उसे व्यावहारिक और रोजगारपरक नहीं बना पाए हैं। पिछले 25 साल में उच्च शिक्षा और तकनीकी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी विस्तार हुआ है। हजारों इंजीनियरिंग कॉलेज खुल गए हैं और लगातार खुल भी रहे हैं। पर क्या इन संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी दी जा सकती है?

सच्चाई यह है कि देश के अधिकांश इंजीनियरिंग कॉलेज डिग्री बांटने की दुकान बन कर रह गए हैं। इनसे निकलने वाले लाखों युवाओं के पास इंजीनियरिंग की डिग्री तो है लेकिन काम करने की समुचित स्किल नहीं है। इसी वजह से देश भर में हर साल लाखों इंजीनियर बेरोजगारी का दंश झेलने को मजबूर हैं। पिछले दिनों विभिन्न तकनीकी नौकरियों की सैलरी का सर्वे करने वाली कंपनी टीमलीज ने एक रिपोर्ट में बताया कि देश में इलेक्ट्रिशियन, फिटर और प्लंबर की मांग बहुत ज्यादा है, जबकि इंजीनियर्स की मांग बहुत कम और आपूर्ति बहुत ज्यादा है।

टीमलीज के सर्वे के अनुसार बारहवीं पास इलेक्ट्रीशियन की औसत सैलरी 11300 रुपए प्रति माह है, जबकि डिग्री वाले इंजीनियर की औसत सैलरी 14800 रुपए प्रति माह यानी 3500 रुपए ज्यादा है। पिछले छह साल में इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, टेक्नीशियन का वेतन बढ़ा है। जबकि आईटी इंजीनियरों की एंट्री लेवन तनख्वाह लगभग उतनी ही है। रिपोर्ट के अनुसार दस साल पहले जब आईटी का बूम हुआ था तब काफी मांग थी। जबकि पिछले 10 सालों में मांग में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है, जबकि मांग के मुकाबले कई गुना ज्यादा इंजीनियरिंग ग्रेजुएट निकल रहे हैं।

हर साल देश में 15 लाख इंजीनियर बनते है लेकिन उनमें से सिर्फ 4 लाख को ही नौकरी मिल पाती है, बाकी सभी बेरोजगारी का दंश झेलने को मजबूर हैं। नेशनल एसोशिएसन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विसेज कंपनीज यानी नैसकाम के एक सर्वे के अनुसार 75 प्रतिशत तकनीकी स्नातक नौकरी के लायक नहीं है। आईटी इंडस्ट्री इन इंजीनियरों को भर्ती करने के बाद ट्रेनिंग पर करीब एक अरब डॉलर खर्च करती है। इंडस्ट्री को उसकी जरूरत के हिसाब से इंजीनियरिंग ग्रेजुएट नहीं मिल पा रहे हैं। डिग्री और स्किल के बीच फासला बहुत बढ़ गया है। इतनी बड़ी मात्रा में इंजीनियरिंग बेरोजगारों की संख्या देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिरता के लिए भी ठीक नहीं है। लगातार बेरोजगारी बढ़ने की वजह से इंजीनियरिंग कॉलेजों में बड़े पैमाने पर सीटें खाली रहने लगी है।

उच्च और तकनीकी शिक्षा के वर्तमान सत्र में ही पूरे देश भर में 7 लाख से ज्यादा सीटें खाली हैं। तकनीकी शिक्षा में देश के अधिकांश राज्यों में 60 से 70 प्रतिशत तक सीटें खाली हैं। देखा जाए तो यह आंकड़ा चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि स्थिति साल दर साल खराब ही होती जा रही है।

एक तरफ प्रधानमंत्री श्मेक इन इंडियाश की बात कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ देश में तकनीकी और उच्च शिक्षा के हालात बदतर स्थिति में हैं। आज हमारे शौक्षिक कोर्स 20 साल पुराने है, इसलिए इंडस्ट्री के हिसाब से छात्रों को अपडेटेड थ्योरी नहीं मिल पाती। इसी वजह से आज इंजीनियरिंग स्नातक के लिए नौकरी पाना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता जा रहा है। अभी स्थिति यह है कि सारा ध्यान थ्योरी सब्जेक्ट पर है, उन्हें रटकर पास करने में ही छात्र अपनी इतिश्री समझते हैं। इंडस्ट्री और इंस्टीट्यूट्स के मध्य एक कॉमन प्लेटफार्म स्थापित करने की दिशा में सरकारी और निजी दोनों प्रयास जरूरी हैं।

एस्पायरिंग माइंड्स की एक रिपोर्ट के अनुसार 20 प्रतिशत से भी कम इंजीनियर आईटी क्षेत्र में नौकरी के लायक हैं। 8 प्रतिशत से भी कम इंजीनियर कोर इंजीनियरिंग के लायक हैं। एस्पायरिंग माइंड्स ने अपनी रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि देश में युवा बेरोजगारों की बढ़ती फौज अर्थव्यवस्था की कुशलता और सामाजिक स्थिरता के हिसाब से भी ठीक नहीं है। देश में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में पढ़ाई–लिखाई की गुणवत्ता बहुत अच्छी नहीं है। अधिकांश कॉलेजों में शिक्षण का स्तर और प्रशिक्षण की व्यवस्था ठीक नहीं है।

देश में इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर और टेक्नीशियन की मांग बढ़ रही है तो उसका लाभ कैसे उठाया जा सकता है! क्या हमारे पास ऐसी कोई योजना है, ऐसा कोई सेंटर हैं जो ऐसी नौकरियों के लिए कम पैसे में प्रशिक्षण दे सकें! ज्यादातर लोग तो अपने अनुभव से सीख कर ही नौकरी पाते हैं, वह भी अस्थायी। जबकि प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है। इस दिशा में सरकार को पहल करनी पड़ेगी। अब वक्त आ गया है कि हम यह सोचें कि क्या हमारे पास क्वालिटी इंजीनियर हैं। चीन के कुल छात्रों का 34 प्रतिशत इंजीनियरिंग की पढ़ाई करता है, जबकि भारत में कुल छात्रों का मात्र 6 प्रतिशत। इंजीनियरिंग में इतने कम एनरोलमेंट के बाद भी देश में क्वालिटी इंजीनियरों की संख्या बहुत कम है।

पिछले दिनों एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि युवाओं में प्रतिभा का विकास होना चाहिए। उन्होंने डिग्री के बजाया योग्यता को महत्व देते हुए कहा था कि छात्रों को स्किल डेवलपमेंट पर ध्यान देना होगा। आज देश में बड़ी संख्या में इंजीनियर पढ़–लिख कर निकल रहे हैं, लेकिन उनमें स्किल की बहुत कमी है। इसी वजह से लाखों इंजीनियर बेरोजगार हैं। इंडस्ट्री की जरूरत के हिसाब से उन्हें काम नहीं आता। सच्चाई यह है कि आज डिग्री के बजाय हुनर की जरूरत है। शैक्षणिक स्तर पर स्किल डेवलपमेंट के मामले में जर्मनी का मॉडल पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। जर्मनी में डुअल सिस्टम चलता है। वहां के हाईस्कूल के आधे से ज्यादा छात्र 344 कारोबार में से किसी एक में ट्रेनिंग लेते हैं। चाहे वह चमड़े का काम हो या डेंटल टेक्नीशियन का। इसके लिए वहां छात्रों को सरकार से महीन में 900 डॉलर के करीब ट्रेनिंग भत्ता भी मिलता है। जर्मनी में स्किल डेवलपमेंट के कोर्स मजदूर संघ और कंपनियां बनाती है। वहां का चेंबर्स और कामर्स एंड इंडस्ट्रीज परीक्षा का अयोजन करता है। स्पेन, ब्रिटेन से लेकर भारत तक सब जर्मनी के इस स्किल डेवलपमेंट का मॉडल अपनाना चाहते हैं।

पिछली यूपीए सरकार ने 2009 में जर्मनी के साथ स्किल डेवलपमेंट को लेकर कार्यक्रम भी बनाएथे।लेकिन सरकारी लालफीताशाही के चलते उनका ठीक से क्रियान्वयन नहीं हो पाया। केंद्र सरकार को शैक्षणिक कोर्सेस के साथ–साथ स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान देना होगा। तभी इसके सकारात्मक परिणाम निकल सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का श्मेक इन इंडियाश का सपना तभी पूरा हो पाएगा जब देश के युवा हुनरमंद होंगे और वे डिग्री के बजाय हुनर को प्राथमिकता देंगे।

(यं.स.)

''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए''

बाल कृष्ण मिश्र

''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए'' का संदेश देने वाले युवाओं के प्रेरणास्त्रोत, समाज सुधारक युवा युग–पुरुष स्वामी विवेकानंद की जयन्ती से जुड़ा यह वर्ष उनके व उनकी वैचारिकी का वर्तमान सन्दर्भ में मूल्यांकन करने का एक स्वर्णिम अवसर है। देश में प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी ''राष्ट्रीय युवा दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर उनके वैचारिक जीवन से जुड़े प्रतिबिम्ब ही नहीं, बल्कि उनके उदात्त सिद्धान्तों का चित्रण भी वर्तमान की आधारपीठिका तैयार करते हुये भारत के भविष्य का भी प्रतिचित्र तैयार करना होगा। हमेशा जोश और जुनून से सराबोर रहने वाली युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है। देश की युवा शक्ति ही उसका सबसे बड़ा हथियार होती है। हरदम कुछ नया कर गुजरने की चाह रखना। नित नई–नई चुनौतियों का सामना करने तैयार रहना और संकल्प शक्ति ऐसी कि जो एक बार करने की ठान लें तो लाख मुश्किलें भी उसको बदल न पाए।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''मेरी आशा युवाओं में है। इनमें से मेरे कार्यकर्ता आयेंगे।'' युवा शक्ति ने प्रतिसाद भी दिया और देश के लिये अपने आप को समर्पित कर दिया। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित क्रांतिकारी हो या असहयोग के शांतिपूर्ण मार्ग से विरोध प्रदर्शन करने वाले देशभक्त हो दोनों ही ने स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा प्राप्त की। वर्तमान में भी भारत को पुनः उस जागरण की आवश्यकता है। शिकागों से लौटते ही रामेश्वरम के किनारे पर अपने सम्बोधन में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, ''सूदीर्घ रजनी अब समाप्तप्राय सी दिखाई देती है। लम्बी काली रात टल गई अब उषा होने को है। यह सोया भारत जाग उठा है। केवल अन्धे देख नही सकते, विक्षिप्तबुद्धि समझ नहीं सकते कि यह सुप्त विराट जाग गया है। हिमालय से चल रही मंद शीतल लहर ने इस महाकाय को जगा दिया है। अपनी नियती को यह प्राप्त करके रहेगा। विश्व की कोई शक्ति इसे नहीं रोक पायेगी।''

वर्तमान में एक ओर स्वामीजी की भविष्यवाणी सत्य होने के लक्षण दिखाई दे रहे है। देश की युवाशक्ति अनेक क्षेत्रों में नये नये कीर्तिमान गढ़ रही है। ज्ञान–विज्ञान, आर्थिक विकास, अंतरिक्ष तकनीक, संगणक, व्यापार आदि सब में भारती य युवा पुनः अपने खोये गौरव का प्राप्त कर विश्व नेतृत्व की ओर अग्रसर हैं। भारत विश्व का सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश बन गया है। इतना ही नहीं विश्व के सर्वाधिक अभियंता व चिकित्सक निर्माण करने का श्रेय भी हमें ही है। इसके साथ ही इतनी बड़ी कुशल व अकुशल श्रामिक संख्या भी और किसी देश के पास नहीं है। जनसंख्या में चीन भले ही हमसे आगे हो किंतु उसकी औसत आयु प्रौढ़ता की ओर है और 3 वर्षों में वहाँ कार्यबल इतना कम हो जायेगा कि वर्तमान उत्पादकता बनाये रखने के लिये भी उसे अन्य एशियाई देशों की सहायता लेनी होगी। आध्यात्मिक क्षेत्र में तो भारत का वर्चस्व सदा से ही रहा है।

किन्तु दूसरी ओर एक राष्ट्र के रुप में भारत की स्थिति बड़ी विकट है। देश चारों ओर से चुनौतियों से घिरा हुआ है। चीन व पाकिस्तान का आपसी गठजोड़ सामरिक रूप से भारत को चारों ओर से घेर रहा है। इसी समय हमारी प्रशासकीय व्यवस्था पूर्णतः चरमराई हुई दिखाई पड़ रही है। समाज में मूल्यों के ह्रास का संकट है। शासन द्वारा अल्पसंख्यकों के नाम पर चल रहा तुष्टीकरण का खेल फिर से विभाजन जैसे हालात पैदा कर रहा है। वर्तमान में युवाओं के समक्ष सबसे बड़ी दिक्कत भ्रष्टाचार हैद्य देश भ्रष्टाचार रूपी घने कुहरे से घिरा हुआ है ,चारो तरफ लूट खसोट मची हुई है ,2जी ,कामनवेल्थ ,कोलगेट जैसे बहुत से घोटालों ने देश की रीढ़ को कमजोर कर दिया है द्य द्य युवाओं के हमदर्द होने का ढोंग करने वाले भाषणबाज मंच पर आकर माला धारण करते हैं और लच्छेदार भाषण देकर खूब तालियां बटोरते हैं, लेकिन अगर कुछ नहीं बदलता है तो वो है युवाओं की दुर्दशा। ऐसे में युवाओं को आगे आना होगा और "मेरा भारत महान" की अवधारणा को सार्थक करना होगा क्योंकि वे ही देश के कर्णधार है और बड़ा परिवर्तन उन्हीं के द्वारा ही होना है देश की राजनीति में जब तक 60ः से 80ः तक युवाओं की भागीदारी नहीं होगी तब तक न तो सत्ता बदलेगी न ही व्यवस्था बदलेगी। बुजुर्गों में जिन्होंने लम्बे अरसे से देश की प्रामाणिकता व पवित्रता से सेवा की है, उनका हम हृदय से सम्मान करते हैं। लेकिन आज 60ः से 80ः राजनीति में पुराने लोगों का कब्जा है और उनमें से ज्यादातर लोग एक हार्ड क्रिमनल की तरह काम कर रहे हैं और उनमें जो कुछ अच्छे–सच्चे हैं भी, तो वे थके हुये हैं या बार–बार उनके साथ धोखा हुआ है – वे ठगे गये हैं। उनसे अब बड़े परिवर्तन की उम्मीद हम नहीं कर सकते। युवाओं को अपने सपने पूरे करने के लिए ईमानदारी से अपने लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश करनी होगी वोट की ताकत असीमित है, इसलिए युवा इस शक्ति का सकारात्मक बदलाव के लिए प्रयोग करें और बेहतर भविष्य के लिए मतदान के माध्यम से ईमानदार और विकासपरक सोच वाले प्रतिनिधि को चुने तभी उनका और देश का भला होगाद्य अवसर व चुनौती के एकसाथ सामने है ऐसे समय देश के युवाशक्ति को सन्नध होना होगा। अपनी तरुणाई को ललकार कर शक्ति को जागृत करना होगा। युवा की परिभाषा ही बल से है। स्वामी विवेकानन्द युवाओं से आवाहन किया करते थे, ''मुझे चाहिये लोहे की मांसपेशियाँ, फौलाद का स्नायुतन्त्र व वज्र का सा हृदय।'' शारीरिक बल, मानसिक बल व आत्मबल तीनों से युक्त युवा ही स्वामी जी का कार्य कर सकता है। स्थान स्थान पर फिर आखाड़े लगें। बलोपासना को पुनः जगाने का प्रसंग है। जागों युवा साथियों अपनी कमर कस कर खड़े हो जाओ। माँ की सेवा के लिये सामर्थ्य जुटाओं!

Great Human Capital

Special on birthday of Swami Vivekananda

- If the mind is intensely eager, everything can be accomplished mountains can be crumbled into atoms.
- Take up one idea. Make that one idea your life think of it, dream of it, live on idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body, be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way to success.
- Come out into the universe of Light. Everything in the universe is yours, stretch out your arms and embrace it with love. If you every felt you wanted to do that, you have felt God.
- All knowledge that the world has ever received comes from the mind; the infinite library of the universe is in our own mind.
- Stand up, be bold, be strong. Take the whole responsibility on your own shoulders, and know that you are the creator of your own destiny. All the strength and succor you want is within yourself. Therefore make your own future.
- There is no help for you outside of yourself; you are the creator of the universe. Like the silkworm you have built a cocoon around yourself…. Burst your own cocoon and come out aw the beautiful
- If the mind is intensely eager, everything can be accomplished mountains can be crumbled into atoms.
- Take up one idea. Make that one idea your life think of it, dream of it, live on idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body, be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way to success.
- Come out into the universe of Light. Everything in the universe is yours, stretch out your arms and embrace it with love. If you every felt you wanted to do that, you have felt God.
- All knowledge that the world has ever received comes from the mind; the infinite library of the universe is in our own mind.
- Stand up, be bold, be strong. Take the whole responsibility on your own shoulders, and know that you are the creator of your own destiny. All the strength and succor you want is within yourself. Therefore make your own future.
- There is no help for you outside of yourself; you are the creator of the universe. Like the silkworm you have built a cocoon around yourself…. Burst your own cocoon and come out aw the beautiful butterfly, as the free soul. Then alone you will see Truth.

- It is our own mental attitude which makes the world what it is for us. Our thought make things beautiful, our thoughts make things ugly. The whole world is in our own minds. Learn to see things in the proper light. First, believe in this world, that there is meaning behind everything. Everything in the world is good, is holy and beautiful. If you see something evil, think that you do not understand it in the right light. Throw the burden on yourselves!
- Hold to the idea, "I am not the mind, I see that I am thinking, I am watching my mind act," and each day the identification of yourself with thoughts and feelings will grow less, until at last you can entirely separate yourself from the mind and actually know it to be apart from yourself.
- All love is expansion, all selfishness is contraction. Love is therefore the only law of life. He who loves lives, he who is selfish is dying. Therefore love for love's sake, because it is law of life, just as you breathe to live.
- Our duty is to encourage every one in his struggle to live up to his own highest idea, and strive at the same time to make the ideal as near as possible to the Truth.
- Even the greatest fool can accomplish a task if it were after his or her heart. But the intelligent ones are those who can convert every work into one that suits their taste.
- Condemn none: if you can stretch out a helping hand, do so. If you cannot, fold your hands, bless your brothers and let them go their own way.
- Each work has to pass through these stagesridicule, opposition, and then acceptance. Those who think ahead of their time are sure to be misunderstood.
- If you think that you are bound, you remain bound; you make your own bondage. If you know that you are free, you are free this moment. This is knowledge, knowledge of freedom. Freedom is the goal of all nature.
- As long as we believe ourselves to be even the least different from God, fear remains with us; but when we know ourselves to be the One, fear goes; of what can we be afraid?
- Your Atman is the support of the universewhose support do you stand in need of? Wait with patience and love and strength. If helpers are not ready now, they will come in time. Why should we be in a hurry? The real working force of all great work is in its almost unperceived beginnings.
- Learning and wisdom are superfluities, the surface glitter merely, but it is the heart that is the seat of all power. It is not in the brain but in the heart that the Atman, possessed of knowledge, power, and activity, has its seat.
- Understanding human nature is the highest knowledge, and only by knowing it can we know God? It is also a fact that the knowledge of God is the highest knowledge, and only by knowing God can we understand human nature
- Purity, patience, and perseverance are the three essentials to success and, above all, love.
- If you want to have life, you have to die every moment for it. Life and death are only different expressions of the same thing looked at from different standpoints; they are the falling and the rising of the same wave, and the two form one whole.
- Each soul is potentially divine. The goal is to manifest this divinity within by controlling nature, external and internal. Do this either by work, or worship or psychic control or philosophy by one or more or all of these and be free.

- Rahul Mittal

क्लीन इंडिया में मन के विकार भी तो मिटें

भारतीय संस्कृति में पवित्रता यानी स्वच्छता पर बेहद जोर दिया गया है। इसका संबंध न केवल हमारे मन से है बल्कि हमारे आसपास के वातावरण से भी है। स्वच्छता का महत्व प्राचीन काल से रहा है। गुरूकुल हो, गांव हो या फिर छोटे–छोटे कस्बे किसी समय बेहद साफ–सुथरे होते थे। देश की अधिकांश नदियां निर्मल थीं। आजादी से पहले के लोगों की याद में भारत उस समय कई विकारों से मुक्त था। हालांकि गंदगी तब भी थी मगर ऐसी नहीं थी, जो अब भारतीय शहरों में दिखती है। इस मायने में हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल को गंभीरता से लिए जाने की जरूरत हैं। उनके संदेशों से क्या बच्चे और क्या बड़ी सभी जैसे नींद से जागे हैं। मगर उन्हें पहले मन के विकारों को दूर करना होगा। यानी अपनी कई आदतें बदलनी होंगी, तभी हम भारत को क्लीन इंडिया बना पाएंगे।

गांधी जी का भी सपना था कि उनका देश साफ–सुथरा हो। दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले हिंदुस्तानियों पर जब यह आरोप लगा कि वे अपना घर साफ नहीं रखते तो उन्हें यह बात अखरी। दरअसल, सफाई अभियान की शुरूआत तो वहीं से शुरू हो गई थी। कुछ लोगों ने तो गांधी का अपमान भी किया लेकिन इस सफाई अभियान का फायदा तब हुआ जब वहां प्लेग का प्रकोप बढ़ा। इस परेशानी से बचने के लिए लोग गांधीजी की बातों को मानने लगे और सफाई के प्रति ज्यादा सचेत हो गए। उनका मानना था कि सुधार की गरज तो सुधारक की अपनी होती हैं। अगर वह समाज में किसी प्रकार का बदलाव लाना चाहता हैं तो उसे खुद आगे आना चाहिए। इस मायने में यह पहल इस बार खुद प्रधानमंत्री ने की। यह पहल सबके लिए आदर्श साबित होगा।

इस अभियान को नरेंद्र मोदी आगे बढ़ाना चाहते हैं। निश्चित तौर से आज फिर से देशवासियों को जागरूक होने की जरूरत हैं। उन्हें सफाई को लेकर सजग होने की जरूरत हैं। जैसे एक गृहणी और एक मां घर को साफ–सुथरा रखती हैं वैसे ही नागरिकों को भी अपने आस–पडोस, सड़कों–गलियों, नदी–नालों, स्कूल–दफ्तरों हर जगह यानी पूरे पर्यावरण को, बच्चों और युवाओं को स्वच्छ भारत अभियान घर से ही शुरू करना चाहिए। तभी यह पहल राष्ट्रीय स्वरूप ले सकेगी।

हर साल डेंगू, मलेरिया और हैजा जैसी बीमारियों से न जाने कितनी जानें जाती हैं। यह सब गंदगी के कारण ही होता हैं। गांधी जी जिस आश्रम में भी रहते थे, वहां के कर्मचारियों को हिदायत थी कि वे पूरी तरह साफ–सफाई रखें। चाहे वह बड़े पदाधिकारी हों या छोटे कर्मचारी, हर किसी को अपना शौचालय खुद साफ करना पड़ता था।

आज सड़क पर कूड़ा फेंकने वालों की कमी नहीं। दीवारों को गंदा करने और पालीथिन के बेतहाशा इस्तेमाल से भारत के हर शहर में गंदगी बढ़ी है। यह सब देखकर दूसरे देशों से आने वाले लोग हैरान होते हैं और अपने देश लौट कर वहां चर्चा करते हैं। इससे भारत की छवि कितनी बिगड़ती है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

प्रधानमंत्री जी के सपने को एक व्यक्ति साकार नहीं कर सकता बल्कि इसके फिर पूरे समाज को आगे आना होगा। सड़क पर चलते समय कोई भी कूड़ा कूड़ेदान में डालना होगा। दीवारों पर पोस्टर लगाने और नारे लिखने से शहर–गावं गंदे लगते हैं। यह सब बंद करना होगा।

आज सफाई के मामले में हम इतने लापरवाह हो गए है कि प्रधानमंत्री को हमें जागरूक करने की जरूरत पड़ रही हैं। किसी भी दुकान या मॉल के आगे खड़े होकर कुछ खाते हैं तो सामने कूड़ादान होते हुए भी हम बचा–खुचा और कागज आदि सड़क पर फेंकते देते हैं। आज कुछ स्कूली बच्चे जहां पर्यावरण व सफाई के प्रति सजग हुए हैं। वहीं कुछ इतने लापरवाह हैं कि सड़क पर गंदगी फेंकने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करते। बसों से थूकते और उल्टी करते लोग देखे जा सकते हैं। आज गंगा नदी की सफाई के लिए स्वयं सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा है। स्वच्छता के मामले में आम आदमी की जिम्मेदारी बेहद बड़ी हैं। उन्हें अपने बच्चों को सफाई का महत्व समझना होगा। घर के साथ–साथ आस–पास की सफाई के बारे में भी जागरूक करना होगा। आज हमें मन के विकारों को साफ करने के साथ आसपास की गंदगी को भी दूर करने की जरूरत है।

इस समय पॉलीथिन पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन हैं। हर एक व्यक्ति को पॉलीथिन पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन हैं। हर एक व्यक्ति को पॉलीथिन का इस्तेमाल बंद करना होगा। सरकार को इस दिशा में कड़े कानून बनाने होंगे। कानून बने भी हैं। जुर्माने भी लगते हैं। पर लोगों में अब भी बदलाव नहीं आया है। छोटे–छोटे रेडड़ी–पटरी वालों से लेकर बड़ी–बड़ी दुकानों में पॉलीथिन के इस्तेमाल पर रोक लगानी होगी और साथ ही इसका बेहतर विकल्प ढूंढ़ना होगा। सड़कों पर जगह–जगह कूड़ेदान बनाने होंगे ताकि लोग सड़क पर कूड़ा न फेंके। सफाई के प्रति जागरूकता अभियान खुद से शुरू करना होगा ताकि अतिथि देवो भवः जैसे विज्ञापन सार्थक लगें।

(यं.स.)

शाइनिंग इंडिया में बेगानी हिन्दी

हिंदी भाषा कोई साधारण भाषा नहीं है। यह हमारी भारतीयता का प्रतीक है। यह प्रतीक है हमारे भारत के गौरव और सम्मान का। अंग्रेजी और चाइनीज भाषा के बाद हिंदी भाषा की सर्वाधिक बोली जाती है। इस भाषा का अपना अलग महत्व है। संस्कृत के बाद यह एक ऐसी भाषा है जो देवनागिरी लिपि में लिखी जाती है।

भारत के अधिकतर राज्यों में यह बोली और समझी जाती है। साथ ही विश्व के अनेक विश्व विद्यालयों में इसे पढाया जाता है। इतना प्राचीन इतिहास और मजबूत वर्तमान होने के बाद भी आज हमारी हिंदी का अस्तित्व खतरे में है। ऐसा मेरा नहीं हिंदी के बड़े बड़े साहित्यकारों और भाषा के जान कारों का मानना है। वर्तमान में हिंदी हमारी राजभाषा है और संविधान में इसे विशिष्ट भाषा का दर्जा मिला हुआ है।

लेकिन आज उस पर अंग्रेजी भाषा हावी हो रही है। हिंदी भाषा लोगो के दिलो में राज करती है लेकिन वह लोगो की जुबान पर आते आते शरमा जाती है। हम आज हिंदी में बात करना अपमानजनक समझने लगे हैं। मेट्रो सिटी में तो इंग्लिश में बात करना एक रूतबे की बात है। यदि कोई टूटी फूटी अंग्रेजी भी बोलता है तो उसकी इज्जत में चार चाँद लग जाते हैं। लेकिन यदि कोई हिंदी में बात करता है तो आज उसका उपहास उड़ाया जाता है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की पहचान होती है और वह राज्य भाषा के बिना अपाहिज होता है। अंग्रेजी बोलना कोई गलत बात नहीं है लेकिन इंग्लिश के फेर में अपनी माटी की भाषा भूल जाना सही नहीं है। समाज में जहाँ पर लोग हिंदी नहीं जान पाते वहां पर अंग्रेजी में वार्तालाप करना जरूरी है लेकिन माटी की भाषा के साथ अन्याय पतन की तरफ ले जायेगा। हिंदी के विस्तार के लिए यह जरूरी है कि सरकारी दफ्तरों में हिंदी में काम काज होना चाहिए। बचपन से सभी विद्यालयों में हिंदी अनिवार्य विषय के रूप में शामिल की जानी चाहिए। साथ ही न्याय के मंदिरों के भी सभी जजमेंट हिंदी में ना केवल आने चाहिए बल्कि कोर्ट कचहरी में सुनवाई भी हिंदी में ही होनी चाहिए तभी हम हिंदी के साथ न्याय कर पाएंगे और तभी हिंदी दिवस जैसे उत्सवो की सार्थकता सिद्ध हो पायेगी। फिर शायद हम हिंदी को साल में एक दिन याद नहीं करेंगे, वो रोज हमारे साथ होगी।

शिखर श्रीवास्तव
बीजेएमसी – प्रथम वर्ष

This Month

January 26, 1788 - The British established a settlement at Sydney Harbor in Australia as 11 ships with 778 convicts arrived, setting up a penal colony to relieve overcrowded prisons in England.

*****

January 8, 1798 - The 11th Amendment to the U.S. Constitution was ratified, preventing lawsuits against a state by anyone from another state or foreign nation.

*****

January 21, 1793 - In the aftermath of the French Revolution, King Louis XVI of France was guillotined on the charge of conspiring with foreign countries for the invasion of France. During the Revolution, the King had attempted to flee to Austria for assistance. Ten months later, his wife, Queen Marie Antoinette, was also guillotined.

*****

January 1, 1801 - Ireland was added to Great Britain by an Act of Union thus creating the United Kingdom of Great Britain and Ireland.

*****

January 8, 1815 - The Battle of New Orleans occurred as General Andrew Jackson and American troops defended themselves against a British attack, inflicting over 2,000 casualties. Both sides in this battle were unaware that peace had been declared two weeks earlier with the signing of the Treaty of Ghent ending the War of 1812.

*****

Compilation: Dr. Vaibhav Bansal

I Did It My Way

I did it my way, not for the applause but because,
Failure was not an option and I became a rebel with a cause.
I wanted higher education and was told I couldn't have it all,
So I had to prove them wrong even if I had to creep or crawl.
I was accused of having a stubborn streak,
Just because I wasn't mild and meek.
Challenging every obstacle placed in my way,
And all the negative things that people had to say.
In spite of all the "You can't do that," that I was told,
I stubbornly did it my way and confidently smashed the mold.
Marching to a different drummer and dancing to my own tunes,
I kept my eyes on the prize ignoring all the nay-saying buffoons.
To keep on track, I learned to juggle tasks knowing I wouldn't be derailed.
To keep my ducks in a row, I learned to haggle knowing I wouldn't fail.
With dedication and hard work, as sure as night follows day,
Success was mine because I certainly did it my way!

source: http://www.poetrysoup.com/poems/best/education
Compilation: Priyanka Singh (BJMC - I)

Basics of Media

Quartz - A high Intensity incandescent light whose lamp consists of a quartz or silica housing (instead of the customary glass) that contains halogen gas and a tungsten filament. Produces a very bright light of stable color temperature (3,200K). Also called TH (tungsten-halogen) lamp.

*****

Reflected Light - Light that is bounced off the illuminated object. A reflected-light reading is done with a light meter held close to the illuminated object.

*****

Scoop - A scooplike television floodlight.

*****

Scrim - A spun-glass material that is put in front of a lighting instrument as an additional light diffuser or intensity reducer.

*****

Softlight - Television floodlight that produces extremely diffused light.

*****

Spotlight - A lighting instrument that produces directional, relatively undiffused light with a relatively well-defined beam edge.

*****

Back Light - Illumination from behind the subject and opposite the camera.

*****

Background Light - Illumination of the set, set pieces, and backdrops. Also called set light.

*****

Compilation: Rahul Mittal

ओबामा की भारत यात्रा और विश्व

(यंगस्टर ब्यूरो)

बराक ओबामा की भारत यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों में क्या हासिल हुआ, यह अभी अटकलों के दायरे में है। लेकिन यह निर्विवाद है कि इससे एशिया–प्रशांत क्षेत्र की सामरिक रणनीति की दिशा स्पष्ट हो कर उभरी। चीन और पाकिस्तान की प्रतिक्रियाओं से जाहिर है कि उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति और भारतीय प्रधानमंत्री के बीच रणनीतिक मामलों पर बनी सहमति के मतलब को समझा है। चीन में सरकार नियंत्रित मीडिया ने पहले ओबामा की यात्रा के महत्त्व को कम करके दिखाने की कोशिश की। बाद नई उभरती धुरी पर चिंता जताई। चीन सरकार की आधिकारिक प्रतिक्रिया में न्यूक्लीयर सप्लार्स ग्रुप में भारत को शामिल करने की ओबामा की पेशकश का विरोध किया गया। ऐसी ही प्रतिक्रिया पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी सलाहकार सरताज अजीज की आई। दरअसल, जिस समय ओबामा नई दिल्ली में थे, तभी चीन ने पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष राहिल शरीफ की अगवानी की और पाक से अपनी अटूट दोस्ती का सार्वजनिक बयान दिया। गौरतलब है कि ओबामा की नरेंद्र मोदी से बातचीत के बाद जारी साझा बयान में दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियों की परोक्ष आलोचना थी। ऐसी खबरें हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति से बातचीत के दौरान मोदी ने सुझाव दिया कि अमेरिका, चीन, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच सुरक्षा नेटवर्क कायम करने के विचार को पुनर्जीवित किया जाए। यह अमेरिका की पुरानी योजना है। इसके प्रति भारत की बनती दिलचस्पी के दूरगामी निहितार्थ हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि पिछले आठ महीनों में मोदी ने उपरोक्त चारों देशों के साथ भारत के संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में खास रुचि ली है। इस क्षेत्र से अलग इजराइल से भी तेजी संबंध सुधारे गए हैं। इससे यह संदेश गया है कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति एवं सामरिक रणनीति में भारत और अमेरिका एक धुरी पर आ रहे हैं। चीन की बेचैनी का यही सबब है। चीनी टीकाकारों ने कहा है कि इससे उनकी सुरक्षा एवं हितों के लिए तुरंत तो कोई चुनौती नहीं आएगी, लेकिन अगर अमेरिका ने भारत को उन्नत सैनिक तकनीक दी तो उससे इस क्षेत्र का शक्ति संतुलन बदल सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा को ज्यादा महत्व न देते हुए चीन के आधिकारिक मीडिया ने कहा है कि ओबामा और प्रधानमंत्री मोदी के बीच के 'रोमांस' को ज्यादा आंकने की जरूरत नहीं है क्योंकि दोनों पक्षों की आकांक्षाओं के एकरूप होने से पहले कठिन वार्ताओं के दौर चलने बाकी हैं।

सत्ताधारी चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) के अखबार ने ओबामा की अभूतपूर्व दूसरी बार भारत की यात्रा पर चीन की चिंता जताते हुए पिछले कुछ दिनों में कई लेख प्रकाशित किए थे। इनमें चीनी विश्लेषकों ने इस बात पर जोर दिया था कि इसका उद्देश्य चीन और भारत के सुधरते संबंधों को नुकसान पहुंचाना है। ताजा लेख में हालांकि कहा गया, 'अमेरिका और भारत के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के दौरान अक्सर बडी–बडी बातें और संधियां होती हैं लेकिन यात्राएं समाप्त होने के बाद उनपर क्रियान्वयन कही गई बातों से मेल नहीं खाते हैं।

हालिया यात्रा का भी शायद यही हश्र होगा।' लेख में कहा गया, 'वाशिंगटन हमेशा महज एक रणनीतिक साझेदार यानी भारत जैसे देशों और लंबे समय के सहयोगियों यानी जापान एवं दक्षिणी कोरिया के बीच एक स्पष्ट सीमा खींचकर रखता है। अमेरिका अपनी 'एशिया की धुरी' रणनीति के तहत भारत को दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में एक क्षेत्रीय साझेदार के रूप में देख रहा है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच नई दिल्ली के बढते प्रभाव के चलते अमेरिका को अंतरराष्ट्रीय मामलों में भारत के सहयोग की भी जरूरत है।'

तो क्या इसके जवाब में चीन पाकिस्तान को आगे बढ़ाएगा? और क्या उस धुरी में रूस को शामिल करने की कोशिश होगी, जिसके पश्चिमी देशों से संबंध बेहद बिगड़े हुए हैं? ये बातें अभी भविष्य के गर्भ में हैं। लेकिन भारत–अमेरिका में बनते समीकरणों ने ऐसी तमाम संभावनाओं के दरवाजे खोल दिए हैं।

Vol. 11 **No.** 1
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Heav'n hath no rage like love to hatred turn'd, Nor Hell a fury, like a woman scorn'd."

William Congreve (1670-1729)

*****

"A husband is what is left of the lover after the nerve has been extracted."

Helen Rowland (1876-1950)

*****

"Learning is what most adults will do for a living in the 21st century."

Lewis Perelman

*****

"Dogma is the sacrifice of wisdom to consistency."

Lewis Perelman

*****

"Sometimes it is not enough to do our best; we must do what is required."

Sir Winston Churchill (1874-1965)

*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-42

Winners are always involved in the answer Losers are always part of the problem

*****

Winners know there is still much to learn Losers want to be considered an expert before knowing how little is known.

*****

Winners learn from their mistakes Losers learn only not to make mistakes by not trying anything different.

*****

Everyone's a winner If that is what they choose, Unless their choice is something else, Then of course they lose.

*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in